BA-I Date 17/07/20 Page-1

Paper-I

Unit-3

Dr Raj Gopal
Assistant Professor (G/PT)
Department of Philosophy
V.S.J College Rajnagar
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID:- rajgopal7765@gmail.com

Charvaka: Epistemology
(चार्वाक : ज्ञानमीमांसा)
(प्रत्यक्ष प्रमाण)

भारतीय विचारधारा में चार्वाक दर्शन एक प्रत्यक्षवादी भौतिकवादी और सुखवादी विचारधारा है। यह ज्ञानमीमांसा की दृष्टि से प्रत्यक्षवादी, तत्वमीमांसा की दृष्टि से भौतिकवादी और आचारमीमांसा की दृष्टि से सुखवादी दर्शन है। चार्वाक ज्ञानमीमांसा के दृष्टिकोण से केवल प्रत्यक्ष प्रमाण को मानता है। इसके अलावा वह अन्य सभी प्रमाणों का निषेध करता है।

भारतीय दर्शन में प्रमाणों की संख्या के विषय में मतांतर दृष्टिगत है। जहाँ बौद्ध और वैशेषिक दर्शन दो प्रमाण प्रत्यक्ष और अनुमान को मानता है। वहीं जैन, सांख्य, योग और रामानुज तीन प्रमाण प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द को मानता है। न्याय दर्शन चार प्रमाण, प्रमाण प्रत्यक्ष अनुमान उपमान और शब्द को मानता है। वहीं मीमांसा एवं वेदांत छः प्रमाणों उपरोक्त चार के अलावा अर्थापत्ति और अनुपलब्धि को मानते हैं। चार्वाक दर्शन प्रत्यक्ष को ही एकमात्र प्रमाण मानता है - "प्रत्यक्षमेव प्रमाणम्" इस दृष्टिकोण से भारतीय विचारधारा में चार्वाक का ज्ञानमीमांसा अनूठा है।

Scanned with CamScanner

प्रत्यक्ष का अर्थ होता है जो आँखों से देखा जाय। प्रारंभ में चार्वाक दर्शन को प्रत्यक्ष कहते हैं। परन्तु बाद में अन्य भारतीय दार्शनिकों की भांति वह मानते हैं कि ज्ञानेन्द्रिय एवं विषय के संपर्क से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं। हमारे पाँच ज्ञानेन्द्रिय हैं- आँख, कान, त्वचा, नाक और जीभ। इनके द्वारा जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं। आँख से रूप का ज्ञान, कान से शब्द का, जीभ से स्वाद का और त्वचा से स्पर्श का जो ज्ञान प्राप्त होता है वही प्रत्यक्ष है। प्रत्यक्ष के लिए तीन तत्वों का रहना आवश्यक है। (i) इन्द्रिय, (Sense) (ii) पदार्थ (Object) (iii) सन्निकर्ष (Contact)। प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण मानने के कारण इस प्रमाण में अभ्रान्तता और निश्चयात्मकता है, जो अन्य प्रमाणों में संभव नहीं है। इन्द्रिय एवं पदार्थ के संयोग को सन्निकर्ष कहते हैं। प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण मानने के कारण चार्वाक अन्य प्रमाणों का खंडन करता है। यह खंडन प्रत्यक्ष की महत्ता को बढ़ाता है। चार्वाक के प्रमाण विज्ञान का इंद्रियानुभव पहलू लोकप्रिय है। चार्वाक अनुमान और शब्द जैसे मुख्य प्रमाणों का खंडन करता है।

अनुमान प्रमाण नहीं है — चार्वाक दर्शन अनुमान को प्रमाण नहीं मानता है। अनुमान का शाब्दिक अर्थ होता है 'अनु+मान' अर्थात 'पश्चात ज्ञान'। बाद में प्राप्त ज्ञान को अनुमान

Scanned with CamScanner

कहते हैं। अनुमान में प्रत्यक्ष के आधार पर अप्रत्यक्ष का ज्ञान होता है। आकाश में बादल को देखकर वर्षा होने का ज्ञान। किसी विद्यार्थी को कठिन परिश्रम करते देखकर प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने का ज्ञान अनुमान है। इस प्रकार से अप्रत्यक्ष ज्ञान को अनुमान कहते हैं। चार्वाक दर्शन में अनुमान के विरुद्ध निम्नलिखित आपत्तियाँ हैं।

(i) अनुमान का आधार व्याप्ति है। चार्वाक दर्शन व्याप्ति को अवैध मानता है। दो वस्तुओं के बीच आवश्यक एवं सामान्य संबंध को व्याप्ति कहा जाता है। जैसे जहाँ जहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग है। इस पर्वत पर धुआँ है तो इस पर्वत पर आग है। इस वाक्य में वहाँ वहाँ धुआँ है वहाँ वहाँ आग है व्याप्ति वाक्य है। इसी के आधार पर पर्वत पर आग होने का अनुमान किया गया है। चार्वाक का मानना है कि व्याप्ति के आधार पर किया गया अनुमान सत्य और असत्य दोनों होता है। इसलिए चार्वाक दर्शन व्याप्ति को अवैध मानता है।

(ii) प्रत्यक्ष के आधार पर भी व्याप्ति की स्थापना नहीं की जा सकती है। प्रत्यक्ष के आधार पर भूत, भविष्य एवं वर्तमान के सभी विषयों का ज्ञान संभव नहीं है। प्रत्यक्ष का संबंध केवल वर्तमान से है। वर्तमान समय में भी सभी स्थानों पदार्थों को उपयुक्त नहीं जान सकते हैं। पुनः जो व्याप्ति आज सत्य है वह कल भी सत्य होगा यह भी अप्रमाणित है। प्रत्यक्ष का ज्ञान सदैव सीमित है। इसके कारण यह हमें किसी भी प्रकार का व्याप्ति (सामान्य संबंध) का ज्ञान नहीं करा सकता है। अतः अनुमान प्रमाण जो कि व्याप्ति पर आधारित है अवैध है।

Scanned with CamScanner